PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Dainik Bhaskar, Delhi
Fri, 11 Aug 2017, Page 10
Width: 13.21 cms, Height: 17.15 cms, a4, Ref: 41.2017-08-11.160

नए भारत का सपना और विपक्ष की आशंकाएं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत छोड़ो आंदोलन की पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर वर्ष 2022 तक नया भारत बनाने का जो संकल्प प्रस्तुत किया है वह स्वागत योग्य है। उन्हें पूरी ईमानदारी के साथ सबको साथ लेकर उसे पूरा करना चाहिए। उनकी इस बात से शायद ही कोई असहमत हो कि देश के विकास के कुछ मुद्दे ऐसे हैं जिन पर हमें राजनीति से ऊपर उठना चाहिए। वे भ्रष्टाचार मुक्त, आतंकवाद मुक्त, गरीबी मुक्त, जातिवाद मुक्त, संप्रदायवाद मुक्त, निरक्षरता मुक्त एक स्वच्छ और समृद्ध भारत का सपना देख रहे हैं। उसके लिए विभिन्न योजनाओं का शुभारंभ भी कर रहे हैं। निश्चित तौर पर हमें सपना देखना चाहिए। वर्ष 1942 के आंदोलन में जेलों में पड़े तमाम नेता सपने ही देख रहे थे और उसी सपने के लिए उन्होंने अपनी निजी आजादी सीखचों के पीछे कैद करवा ली थी। प्रधानमंत्री अच्छे वक्ता होने के साथ स्वप्नदर्शी हैं और वे उसके लिए वे कठिन श्रम भी करते हैं। इस बात को उनके समर्थकों के साथ विरोधी भी स्वीकार करते हैं। तभी उन्होंने भारत छोड़ो के 'करो या मरो' नारे को नया रूप देते हुए कहा भी है कि 'करेंगे और करके रहेंगे'। लेकिन संसद में बहस के दौरान उनके सपनों को कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी स्वीकार करने को तैयार नहीं दिखीं। सोनिया गांधी का यह कहना कि अंधेरा बढ़ रहा है और वे भारत छोड़ो के आदर्शों को संकीर्ण विचारों में कैद नहीं होने देंगी, यह दर्शाता है कि नए भारत के सपनों पर ही मतभेद नहीं है, कहीं पर मनभेद भी है। मोदी के सुनहरे सपनों पर निवर्तमान उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी की यह टिप्पणियां भी सवाल उठाती हैं कि आज भारतीय मूल्य बेहद कमजोर हो रहे हैं। हर नागरिक की भारतीयता पर सवाल उठाया जा रहा है। ऐसे में करिश्माई नेतृत्व के धनी प्रधानमंत्री को यह देखना होगा कि प्रतिष्ठित व्यक्तियों और विभिन्न नागरिक समूहों की आशंकाएं क्या हैं, उन्हें कौन पैदा कर रहा है और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। महात्मा गांधी ने नेहरू और पटेल की आपत्तियों के बावजूद ऐसे व्यक्तित्वों को कैबिनेट और संविधान सभा में जगह दिलाई थी, जो लगातार कांग्रेस का, 1942 के आंदोलन का और स्वयं गांधी का भी विरोध करते रहते थे। मोदी अगर बैर और मनभेद मिटाने का प्रयास करें तो नए भारत के मार्ग में कोई बाधा आ ही नहीं सकती।